# जयप्रकाश नारायण

pg I जय प्रकाश नारायण भारत में समाजवाद के प्रमुख प्रवक्ता और चिन्तक माने जाते हैं। उन्हें गाँधीवादी दर्शन का प्रमुख ~~चिन्तक~~ ~~दर्शिक~~ दार्शनिक माना जाता है। सर्वोदयी विचारकों में उनका नाम विनोबा भावे के साथ बड़े आदर से ~~के~~ लिया जाता है। उनके प्रमुख राजनीतिक और आर्थिक विचार निम्नलिखित हैं। समाजवाद से सम्बन्धित उनके विचार महत्वपूर्ण है।

महात्मा गाँधी जय प्रकाश नारायण को भारतीय समाजवाद का सबसे बड़ा विद्वान मानते थे। जय प्रकाश ने अपनी पुस्तक 'समाजवाद क्यों?' (Why Socialism) में यह बतलाया है कि समाजवाद एक व्यक्तिगत आचरण संहिता न होकर सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है। उनकी दृष्टि में समाजवाद, आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण का सिद्धान्त है। समाजवाद का उद्देश्य समाज का समन्वित विकास करना है।

जयप्रकाश ने समाजवाद के माध्यम से अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का निदान ढूँढ़ा है। उनके अनुसार समाजवादी राज्य को मूलभूत मूल्यों की स्थापना करनी चाहिए और नैतिकता विहीन जीवन को अस्वीकार करना चाहिए। समाजवाद की सफलता के लिए जयप्रकाश ने लोकतांत्रिक राज्य की अनिवार्यता पर बल दिया। समाजवादी होने के नाते जयप्रकाश ने इस बात को स्पष्ट किया है कि सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में व्यापक असमानता का कारण यह है कि कुछ लोगों का उत्पादन के साधनों पर बहुत अधिक नियंत्रण है और बहुसंख्यक लोग उनसे वंचित हैं। इसलिए उनका आग्रह था कि समाज ऐसी व्यवस्था करे जिससे

Pg 2 मनुष्य की शक्ति एवं क्षमताओं को निष्फल करने वाली आर्थिक बाधाएँ दूर हो सकें। वे सामाजिक तथा आर्थिक समानता के समर्थक थे।

समाजवाद की स्थापना उत्पादन के साधनों का समाजीकरण करके ही की जा सकती है। उसके अनुसार केवल उद्योगों का राष्ट्रीकरण तथा वेतन की समानता से ही समाजवाद नहीं लाया जा सकता है। वस्तुतः उद्योगों के राष्ट्रीकरण ने नौकरशाही का शासन स्थापित कर दिया। उनके अनुसार समाजवादी अर्थव्यवस्था की संरचना विकेन्द्रीत होनी चाहिए इसलिए गृह उद्योगों कुटीर उद्योगों एवं छोटे उद्योगों की देश भर में स्थापना कर उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए।

जयप्रकाश जी समाजवादी ~~समाज~~ समाज की स्थापना के लिए शान्तिपूर्ण लोकतांत्रिक साधनों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं मानते। वे अहिंसक जन-आन्दोलन के माध्यम से समाजवाद की स्थापना का विचार प्रकट करते हैं। समाजवाद की सफलता के लिए जयप्रकाश नारायण ने व्यक्ति की इच्छाओं को सीमित करने की आवश्यकता पर बल दिया। जयप्रकाश जी के अनुसार समाजवादी समाज की स्थापना दीर्घ विकास एवं प्रयत्नों पर आधारित होती है। वर्ग-संघर्ष के बिना समाज में समाजवाद की चेतना मात्र दिखायी देती है। केवल समाजवादी बुद्धिजीवियों से समाजवाद स्थापित नहीं होता है। वास्तविक शक्ति काम करने वाले श्रमिकों तथा पूँजीवादी समाज के शोषित वर्गों के समर्थन से ही सम्भव है। शोषित वर्ग द्वारा शोषण

Pg3 को विरोधी सामाजिक व्यवस्था को नष्ट करके एक शोषण विहीन समाजवादी समाज की स्थापना में सहायक बनता है। बुद्धिजीवियों द्वारा इस संघर्ष के वैचारिक भूमिका निभाई जाती है तथा आन्दोलन को विचारवाद की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। समाजवाद की स्थापना के ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में दो स्तर दिखाई देते हैं — एक समाजवादियों द्वारा वर्ग संघर्ष के माध्यम से शक्ति पर नियंत्रण करके तथा दूसरा समाजवादी कार्यक्रम क्रियान्वित करके अर्थात् एक तो क्रान्ति के द्वारा और दूसरा लोकतान्त्रिक तरीकों से समाजवाद की स्थापना हो सकती है, किन्तु लोकतान्त्रिक पद्धति द्वारा समाजवाद की स्थापना वहीं सम्भव है जहाँ राजनीतिक लोकतन्त्र पूर्णतया स्थापित हो चुका हो तथा श्रमिक वर्ग ने एक शक्तिशाली राजनीतिक दल बना कर कृषकों तथा निम्न-मध्यम वर्ग को अपने अधीन कर लिया हो।

संक्षेप में, जयप्रकाश नारायण क्रान्तिकारी समाजवाद के स्थान पर लोकतान्त्रिक समाजवाद की स्थापना के इच्छुक थे वे यह भी मानते हैं कि समाजवाद भारतीय संस्कृति का विरोधी नहीं है। भारतीय संस्कृति के मूल्यों को पूरी तरह सुरक्षित रखते हुए भी हम देश में समाजवाद ला सकते हैं। ~~भारत की परम्पराएं~~